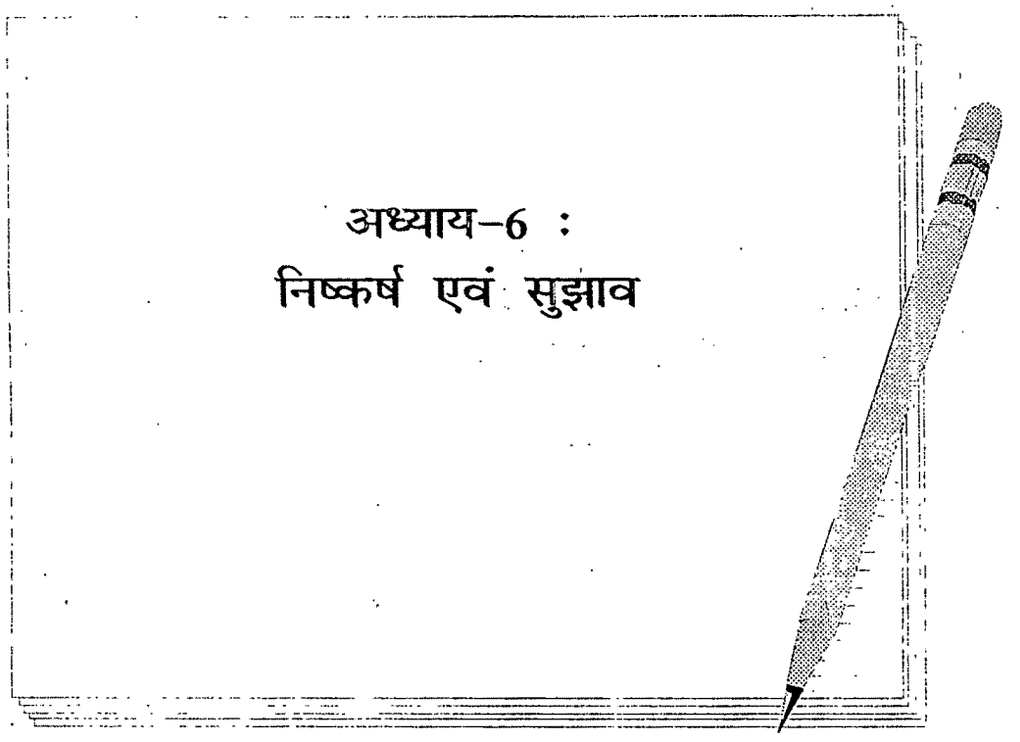

अध्याय–6 :
निष्कर्ष एवं सुझाव

षष्टम् अध्याय

निष्कर्ष एवं सुझाव-

इस अध्याय में पूर्व अध्यायों के संमकों के प्रस्तुत विवरण, विश्लेषण और निष्कर्ष के आधार पर प्राप्त परिणामों को प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमें प्रत्येक परिकल्पना के परीक्षण के प्राप्त परिणाम सूचीबद्ध किये गये है, साथ ही संमकों की प्रकृति, उनके केन्द्रीय प्रवृत्तियों के मापों-प्रसारण के द्वारा प्रस्तुत की गई है। इसमें यह प्रयास किया गया हैं कि अनुसंधान के परिणामों के शैक्षिक निहितार्थ क्या है। इस क्षेत्र में अनुसंधान करने के अन्वेषण के लिए सुझाव दिये जा रहे है, जिससे कि वह इस दिशा में आगे कार्य कर सकें।

पंचम अध्याय में अनुसंधानकर्ता ने प्राप्त आंकड़ों के आधार पर तैयार की गई तालिकाओं का सांख्यिकीय आधार पर विश्लेषण एवं विवेचन किया है। विश्लेष्ण के आधार पर जो निष्कर्ष निकाले गये हैं उन्हें प्रथम अध्याय में वर्णित लक्ष्यों और परिकल्पनाओं के अनुसार इस अध्याय में प्रस्तुत किया जा रहा है। अनुसंधानकर्ता द्वारा निम्न लक्ष्यों को ज्ञात किया गयाः-

प्रथम लक्ष्य : स्नातकों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर ज्ञात करनाः-

जैसा कि सारणी 5.3 में स्पष्ट है कि अध्ययन में लिए गये 198 छात्र -छात्राओं के प्रतिदर्श के लिए शैक्षिक आकांक्षा स्तर का माध्य 43.13, माध्यिका 47.73 एवं बहुलक 56.93 है, इसमें अधिकतम प्राप्तांक 61 तथा न्यूनतम 17 है। इस प्रकार हम देखते है कि इन छात्रों का शैक्षिक स्तर सामान्य है। चित्र संख्या 4.3 एवं 4.3 (A) में यह प्रदर्शित होता है कि इस बंटन का स्वरूप ऋणात्मक रूप से विषम है।

दूसरा लक्ष्यः स्नातकों का व्यावसायिक स्तर ज्ञात करना-

जैसा कि सारणी5.4 के अनुसार अध्ययन हेतु चयनित 198 स्नातकों की

व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का माध्य 43.13, माध्यिका 47.73 एवं बहुलक 56. 93 है, इसमें अधिकतम प्राप्तांक 61 तथा न्यूनतम 17 है। इस प्रकार हम देखते है कि इन छात्रों का शैक्षिक स्तर सामान्य है। चित्र संख्य 4.3 एवं 4.3 (A) में यह प्रदर्शित होता है कि इस बंटन का स्वरूप ऋणात्मक रूप से विषम है।

दूसरा लक्ष्य : स्नातकों का व्यावसायिक स्तर ज्ञात करना–

जैसा कि सारणी 5.4 के अनुसार अध्ययन हेतु चयनित 198 स्नातकों की व्यावसायिक आकांक्षा स्तर के लिए माध्य, माध्यिका एवं बहुलक क्रमशः 42. 25, 47.35, एवं 57.59 हैं। इसका बंटन प्रमाणिक विचलन 8.52 है। व्यावसायिक आकांक्षा स्तर भी सामान्य है, क्योकि न्यूनतम प्राप्तांक एवं अधिकतम प्राप्तांक क्रमशः 7 और 60 हैं।

तीसरा लक्ष्या : स्नाताकों के अभिभावकों की सामाजिक एवं अर्थिक स्तरों का अध्ययन करनाः–

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिकल्पना–एक और परिकल्पना–पांच को सूत्रबद्ध किया जो कि निम्न प्रकार है–

परिकल्पनाः–

ग्रामीण एवं शहरी स्नातकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही हैं इस परिकल्पना का परीक्षण सारणी 5.5 में किया गया है। इसके परीक्षण से यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रामीण और शहरी पृष्ठभूमि के स्नातक की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण नही है कि पूर्वांचल विश्वविद्यालय के बी.ए./बी.कॉम. के विद्यार्थियों की आवासीय पृष्टभूमि का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नही पड़ता है।

इस तथ्या की पुष्टि सारणी 5.17 में बी.ए./बी.कॉम. के छात्रों की आवासीय क्षेत्रों के आधार पर ग्रेडों के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया है, इसमें भी यह निष्कर्ष निकलता है कि आवासीय क्षेत्र छात्रों की उपलब्धि को प्रभावति नही करते हैं।

परिकल्पना–पांच :–

उच्च एवं निम्न आय वर्गो की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अनतर नहीं है इस परिकल्पना का परीक्षण सारणी 5.16 में प्रस्तुत किया गया है, इसमें स्पष्ट हो जाता है कि अभिभावकों को आय स्तर का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता।

चतुर्थ लक्ष्य :–

छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करनाः–

छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अध्ययन हेतु सारणी 4.2 में 50 के अन्तराल से आवृत्ति बंटन दिया गया है इस आवृत्ति बंटन का धनात्मक झुकाव है। इसके लिए सारणी 5.2 में माध्य, माध्यिका एवं बहुलक क्रमशः 490.53 476. 46 एवं 584.32 हैं इसके लिए प्रमाणिक विचलन 103.60 है। इसके लिए निर्मित हिस्टोग्राम चित्र 4.2 तथा आवृत्ति बहुभुज चित्र 4.2(A) में दिये गये है। इससे स्पष्ट है कि यह आबंटन सामान्य नही है। इन निष्कर्षो की पुष्टि सारणी 4. 10 में उल्लेखित रोडानुसार आवंटन से होती है। A और B रोड कोई छात्र नही है, जबकि ग्रेड (50 प्रतिशत से 70 प्रतिशत) में केवल 43 तथा E ग्रेड (0 से 30 प्रतिशत) में 15 छात्र हैं शेष छात्र D ग्रेड (30 प्रतिशत से 50 प्रतिशत) मे है।

लक्ष्य पांच :

स्नाताकों की शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षा स्तरों का उनकी आर्थिक दशा से सम्बन्ध ज्ञात करनाः–

इसके लिए परिकल्पनाए तीन और चार परीक्षण की कसौटी पर रखे गये हैं। इसके परीक्षण में प्राप्त परिणाम इस प्रकार है–

परिकल्पना–तीन :–

शैक्षिक आकांक्षा के उच्च एवं निम्न वर्ग की शैक्षिक उपलब्धि में

सार्थक अन्तर नहीं हैं इसके परीक्षण के लिए बड़े प्रतिदर्श के परीक्षण के सिद्धान्त के आधार पर परीक्षण किया गया है। सारणी 5.7 में दिये गये परिणाम के अनुसार शैक्षिक आकांक्षा के उच्च एवं निम्न वर्गो के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः कह सकते है कि शैक्षिक आकांक्षा का शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं देखा गया।

परिकल्पना–चार :–

व्यावसायिक आकांक्षा एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है। इस परिकल्पना के परीक्षण के परिणाम सारणी 5.8 में दिये गये है, इनसे स्पष्ट है कि व्यावसायिक आकांक्षा और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सम्बन्ा नहीं है।

लक्ष्य छः :–

संकायवार छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करनाः–

इस लक्ष्य से सम्बन्धित परिकल्पना–6 का परीक्षण किया गया है जो इस प्रकार हैः–

परिकल्पना–6 :

विषय संकाय वाणिज्य एवं कला के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। इस परिकल्पना के परीक्षण के लक्ष्य तालिका 5.11 में दिये गये है, इसमें जेड परीक्षण तकनीकी का प्रयोग किया गया है। इस परीक्षण से यह स्पष्ट हुआ है कि वाणिज्य एवं कला की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। संकाय के आधार पर स्नातकों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

लक्ष्य सातः-

स्नातकों के आत्म मूल्यांकन और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध स्थापित करना :-

इस उद्देश्य से सम्बन्धित परिकल्पना-सात इस प्रकार है:-

आत्म मूल्यांकन एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नही है, इस परिकल्पना के परीक्षण के परिणाम सारणी 5.12 एवं 5.13 में दिये गये है। इसके लिए χ^2 परीक्षण युक्ति काम में ली गई है। इस परीक्षण से यह परिणाम निकला है कि शैक्षिक उपलब्धि और आत्म मूल्यांकन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

लक्ष्य आठः-

छात्रों द्वारा दिये गये भावी योजना के विभिन्न विकल्पों एवं उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध स्थापित करनाः-

इस उद्देश्य से सम्बन्धित परिकल्पना संख्या नं. आठ है जो इस प्रकार है:-

भावी योजना के विभिन्न विकल्पों और शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। इस परिकल्पना से सम्बन्धित तथ्य सारणी संख्या 5.14 में तथा परिणाम 5.15 में उल्लेखित है। इसमें यह पाया गया है कि भावी योजना एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है। अतः कह सकते हैं कि प्रतिदर्श में लिये गये छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि उनकी भावी योजना के विकल्पों से प्रभावित होती है।

लक्ष्य नौ :

स्नातकों के आयु स्तर और शैक्षिक उपलब्धियों में सम्बन्ध ज्ञात करना :-

इस उद्देश्य से सम्बन्धित न. नौ इस प्रकार है:-

स्नातकों के आयु स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण के तथ्य सारणी 5.10 में दिये गये है। इसमें स्पष्ट है कि इसके निष्कर्ष में आयु स्तर और शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

लक्ष्य दस :

महिला और पुरूष की शैक्षिक उपलब्धियों का अध्ययनः-

इस उद्देश्य से सम्बन्धित परिकल्पना दो प्रकार हैः-

पुरूष और महिला स्नातकों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। इस परिकल्पना की जांच से सम्बन्धित तथ्य सारणी 5.6 में दिये गये है। इससे स्पष्ट है कि पुरूष और महिला स्नातकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नही है।

सुझावः-

द्रुतगति से परिवर्तित होने वाली सामाजिक, आर्थिक परिवेश में शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान की प्रक्रिया सतत् रूप में जारी हैं। इस क्षेत्र में अनुसंधान की परिणाम सर्वकालीन नहीं माने जा सकते हैं। इसलिए निरन्तर अनुसंधान के परिणामों का परीक्षण एक अनिवार्यता है।

पूर्वांचल विश्वविद्यालय के विकास के साथ निश्चित रूप से शैक्षिक उपलब्धियों में सुधार की अपेक्षा की जाती है इसलिए इस क्षेत्र में भावी अनुसंधान के लिए निम्नलिखित सुझाव सहायक हो सकते हैः-

1. शैक्षिक उपलब्धि के स्तर का अध्ययन, छात्रों को उपलब्ध अध्ययन सुविधाओं यथा मुद्रित सामाग्री, श्रव्य दृश्य सामाग्री, सम्पर्क कक्षाओं की नियमितता, अध्ययन केन्द्रों की सक्रियता आदि के सन्दर्भ में किया जाये।

2. स्नातक स्तर के छात्रों के व्यक्तित्व एवं सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संदर्भ में उनकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया जाये।

3. स्नातक स्तर के छात्रों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति के संदर्भ में उनकों बुद्धिलब्धि का अध्ययन करना।

4. स्नातक स्तर के छात्रों की अभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

5. स्नातक स्तर के छात्रों (ग्रामीण/शहरी) की शैक्षिक उपलब्धि का उनकी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के संदर्भ में अध्ययन किया जा सकता है।